अध्याय चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

अध्याय चतुर्थ

प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.1 प्रस्तावना

अध्ययन हेतु चयनित उपकरण के माध्यम से चुने गये न्यादर्श द्वारा प्रदत्तों का संकलन किया गया। तत्पश्चात् प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण तथा व्याख्या इस अध्याय में की गई। स्वनिर्मित परिकल्पनाओं के स्वीकृति हेतु प्रदत्तों के समूह व उपसमूह में विभाजित कर विश्लेषण तथा अंतिम परिणाम ज्ञात किया जाता है। जो नवीन सिद्धांत की खोज अथवा सामान्यीकरण रूपसे होता हैं। प्रदत्तों विश्लेषण के अंतर्गत उनकी उपलब्धियों की तुलना उनके परीक्षण द्वारा कर शोध के उद्देश्यों का निर्णय प्राप्त निष्पत्तियों द्वारा किया जाता है। प्रस्तुत अध्याय में उचित सांख्यिकीय विधियों का उपयोग करके प्राप्त प्रदत्तों का विश्लेषण करने का प्रयास किया जाता हैं। इस शोध अध्ययंन में कुल 2 परिकल्पनायें रखी गयी हैं। जिसकी जाँच करने और उपरांत त्वरित प्रदत्तों के प्रस्तुतीकरण के लिये शोध समस्या के अध्ययन से निकले परिणाम की व्याख्या की गई हैं।

पी.व्ही. युंग के शब्दों में संकलित तथ्यों के उचित सस्थिति संबंधों के रूप व्यवस्थित कर विचारपूर्ण आधारशिला की स्थापना करना ही विश्लेषण हैं। अर्थात् विश्लेषण शोध का सृजनात्मक पक्ष हैं।

4.2 प्रदत्तों का विश्लेषण एवं व्याख्या

4.2.1 उद्देश्य 1

कक्षा 10वीं के मुक्त एवं अमुक्त विद्यार्थियों की पहचान करना।

जैसा कि तीसरी अध्याय में बताया गया है कि प्रश्नावली (परिशिष्ट क्र.-01) में दिये गये सवालों के आधार पर मुक्त तथा अमुक्त बालकों की पहचान कैसे की जाये? उसी आधार पर मुक्त तथा अमुक्त बालकों की पहचान की गई व उन्हें वर्गीकृत किया गया। संबंधित

विस्तृत वर्गीकरण परिशिष्ट क्र.–02 में दिया गया है। मुक्त तथा अमुक्त बालकों का संकलित विवरण तालिका क्र.–4.2.1 में दिया गया हैं।

तालिका 4.2.1

मुक्त एवं अमुक्त बालकों का संकलित विवरण

विद्यार्थी	शासकीय	अशासकीय	कुल छात्र
मुक्त	44 (73.37%)	39 (65%)	83 (69%)
अमुक्त	16 (26.66%)	21 (35%)	37 (31%)
कुल छात्र	60	60	120

उपरोक्त तालिका से यह स्पष्ट होता है कि शासकीय शाला में 44 अर्थात् 73.3% विद्यार्थी मुक्त तथा 16 अर्थात् 26.66% विद्यार्थी अमुक्त पाये गये। उसी तरह अशासकीय शाला में 39 अर्थात् 65% विद्यार्थी मुक्त व 21 अर्थात् 35% विद्यार्थी मुक्त पाये गये। इससे यह ज्ञात होता है कि शासकीय शाला में मुक्त जातियों की संख्या अशासकीय शाला के तुलना में अधिक है तथा अमुक्त विद्यार्थियों की संख्या कम है।

कुल 120 विद्यार्थियों में से 83 अर्थात् 69% विद्यार्थी मुक्त तथा 37 अर्थात् 37% विद्यार्थी अमुक्त पाये गये। मुक्त विद्यार्थियों की संख्या अधिक होना यह सुखदायी परिणाम है।

निष्कर्ष– मुक्त विद्यार्थी 69% तथा अमुक्त विद्यार्थी 37% है। इससे यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है की मुक्त विद्यार्थियों का प्रतिशत अमुक्त विद्यार्थियों से लगभग दो गुना है।

4.3.2 उद्देश्य 2

मुक्त एवं अमुक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

परिकल्पना–1

कक्षा 10वीं के मुक्त एवं अमुक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु 'टी' परीक्षण का उपयोग किया गया और इसका विवरण तालिका 4.2.3 में दर्शाया गया है।

तालिका4.2.2

चर	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	df	टी'मूल्य
शैक्षिक उपलब्धि	मुक्त	83	57.73	15.584	118	2.993*
	अमुक्त	37	63.92	15.585		

*'टी' मूल्य 2.993, 0.01 स्तर पर सार्थक है।

स्वतंत्रता की कोटी 118, तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर टी का टेबल मूल्य 2.63 है। यह टी टेबल का मान प्राप्त टी के मान 2.993 से कम होने के कारण 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होगी। अतः यह स्पष्ट होता है कि मुक्त एवं अमुक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

टेबल से यह भी ज्ञात होता है कि अमुक्त विद्यार्थियों के उपलब्धि का मध्यमान (63.92) मुक्त विद्यार्थियों के उपलब्धि के मध्यमान (57.73) से अधिक है।

निष्कर्ष मुक्त एवं अमुक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है तथा अमुक्त विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि मुक्त विद्यार्थियों की उपलब्धि कि अपेक्षा अधिक है।

4.3.3 उद्देश्य 3

मुक्त तथा अमुक्त विद्यार्थियों की सह–शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन करना।

परिकल्पना–2

कक्षा 10वीं के मुक्त एवं अमुक्त विद्यार्थियों की सह शैक्षिक उपलब्धि में कोई सार्थक अंतर नहीं है।

इस परिकल्पना के परीक्षण हेतु 'टी' परीक्षण का उपयोग किया गया है। इसका विवरण तालिका 4.2.4 में दर्शाया गया है।

तालिका4.2.3

चर	विद्यार्थी	संख्या	मध्यमान	प्रमाणिक विचलन	df	'टी' मूल्य
सह शैक्षिक उपलब्धि	मुक्त	83	70.59	14.43	118	2.85*
	अमुक्त	37	60.82	18.51		

*'टी' मूल्य 2.85, 0.01 स्तर पर सार्थक है।

स्वतंत्रता की कोटी 118, तथा 0.01 सार्थकता स्तर पर टी का टेबल मूल्य 2.63 है। यह टी टेबल का मान प्राप्त टी के मान 2.85 से कम होने के कारण 0.01 सार्थकता स्तर पर सार्थक है। अतः शून्य परिकल्पना अस्वीकृत होगी। अतः यह स्पष्ट होता है कि मुक्त एवं अमुक्त विद्यार्थियों की सह शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है।

टेबल से यह भी ज्ञात होता है कि मुक्त विद्यार्थियों के उपलब्धि का मध्यमान (70.59) अमुक्त विद्यार्थियों के उपलब्धि के मध्यमान (60.82) से अधिक है।

निष्कर्ष मुक्त एवं अमुक्त विद्यार्थियों की सह शैक्षिक उपलब्धि में सार्थक अंतर है तथा अमुक्त विद्यार्थियों की सह शैक्षिक उपलब्धि मुक्त विद्यार्थियों की उपलब्धि कि अपेक्षा अधिक है।